दुधारु पशुओं में दूध उत्पादन क्षमता बढ़ाने के उपाय

राज किशोर शर्मा एवं कौशल कुमार

“ भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा विगत कुछ वर्षों से प्रगतिशील किसानों की आय दुगुनी करने की दिशा में कई स्तर पर यथा पशुपालकों का उच्च प्रशिक्षण, पशुधन रोजगारोन्मुखी शोध एवं सेमिनार इत्यादि कार्य किए जा रहे हैं। आज के शिक्षित युवा नवीन आधुनिक एवं वैज्ञानिक विधि अपनाते हुए पशुधन की उत्पादन क्षमता बढ़ा कर एक संतुलित एवं आधुनिक जीवन शैली को आकार दे सकते हैं एवं सरकारी सेवाओं पर वेवजह अपनी निर्भरता से बच सकते हैं। ”

परिचय

भारत में दूध उत्पादन मुख्य रुप से गायों एवं भैंसों से होती है। ये 80 प्रतिशत दुध उत्पादन करती है। बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है, यहाँ के किसानों/पशुपालकों के आर्थिक लाभ में दूध उत्पादन कर बिक्रय कर आर्थिक लाभ प्राप्त करना विशेष महत्व रखती है, किन्तु ये तभी संभंव है जब उन्नत नस्ल के दुधारु पशुओं का चुनाव करते हुए समुचित देखभाल, उचित प्रबंधन, रोगो से बचाव एवं हरे चारे एवं संतुलित आहार देकर वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित ढंग से दुध उत्पादन का व्यवसाय शुरू किया जाय। अधिक दुध प्राप्त करने एवं व्यवस्थित दुग्ध व्यवसाय करने हेतु निम्न बातों पर ध्यान देना अति आवश्यक है:–

(क) उन्नत नस्ल का चयन :

- दुधारु पशुओं की खरीद करते समय पशुपालकों को मुख्यतः संकर नस्ल की गाय या ऊँची जाती कि भैंस (मुर्रा, मेंहसना) की ही खरीद करनी चाहिए।
- पहले या दूसरे वियान का ही पशु लेना चाहिए, जो दो से चार दांत की हो।
- गाय की बनावट एवं शारीरिक संरचना

सहायक प्राध्यापक
परजीवी विज्ञान विभाग एवं व्याधि विज्ञान विभाग
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय,पटना

दुध उत्पादन क्षमता

नस्ल	प्रतिदिन	प्रति वियान	टिप्पणी
देशी नस्ल की गाय			
साहीवाल या मोण्टगोमरी	8–10 लीटर	1600–2750 लीटर	इसकी दूध उत्पादन क्षमता क्षमता अन्य देशी नस्ल की तुलना में अधिक होती है
रेडी सिंधी	8–10 लीटर	1700–3400 लीटर	
गीर	10–15 लीटर	1500–1800 लीटर	
थारपारकर	24–25 लीटर	3500 –4000लीटर	
हरियाणा	16–18 लीटर	5000–6000 लीटर	
विदेशी नस्ल की गाय			
जर्सी	18–20 लीटर	4500–6000 लीटर	
हॉलस्टीन फ्रिजीयन	25–30 लीटर	6000–7000 लीटर	अच्छे पालन पोषण पर 15000–18000 लीटर
भैंस की नस्लें			
मुर्रा–(पंजाब हरियाणा)	10–15 लीटर	1800–2500 लीटर	
मेहसाना(गुजरात)	10–12 लीटर	1350–1800 लीटर	

पर ध्यान देते हुए तिकोने आकर की गाय को प्राथमिकता देनी चाहिए। अगला हिस्सा पतला एवं पिछला हिस्सा चौडा एवं भारी होना चाहिए।

- थन के दोनो तरफ पेट निचले हिस्से में एक प्रकार की शिराये होनी चाहिए।ये शिरायें जितनी मोटी एवं टेढी मेंढी होगी गाय उतनी दुधारु होगी।
- दूध दूहने के बाद थन पूरी तरह सिकुड़ जाना चाहिए।
- थन के चारों छेनी की दूरी बराबर होनी चाहिए।
- चमड़ी पतली तथा चमकदार होनी चाहिए एवं योनि का निचला हिस्सा चौड़ा एवं उभरा होना चाहिए।

साहिवाल

रेड सिंधी

जर्सी

हॉलस्टीन फ्रिजीयन

मुर्रा

मेहसाना

(ख) दूध दुहने का तरीका :

- गाय का दुध दुहना भी एक कला है। ठीक ढंग से दूध दुहने पर दूध उत्पादन में वृद्वि होती है। चौबीस घंटे के अन्दर गाय के दूध निकालने का समय दो बार नियत समय पर होना चाहिए। कभी कभी अधिक दूध देने वाली गाय का दूध तीन बार भी दूहते है।

(ग) दुधारु पशुओ के लिए संतुलित आहार :

- दुधारु गाय के खाने में हरा चारा 15 किलोग्राम सुखा चारा 5 किलोग्राम दाना 1/2 किलोग्राम एवं खाने का नमक एक औंस प्रतिदिन। इसके अलावे हर तीन किलोग्राम दूध के लिए 1 किलोग्राम दाने का मिश्रण अधिक मिलाना चाहिए। खनिज पदार्थ का मिश्रण भी अति आवश्यक है।
- दूधारु भैंस– साधारणतः गाय से डेढ़ गुणा अधिक चारा खाती है। गाय की

दूध दुहने की सही विधि

तुलना में मोटा चारा ज्यादा खाती है। एक साधारण भैंस के खाने में हरा चारा 20 किलोग्रम, सुखा चारा 8 किलोग्रम, दाना 1 किलोग्रम, नमक 1 औस प्रतिदिन मिलना चाहिए। इसके अलावे हर 2.5 किलोग्रम दूध पर एक किलो दाना– खल्ली अतिरिक्त देना चाहिए।

- अधिक दुध उत्पादन के लिए दुधारु पशुओ को संतुलित आहार देना अति आवश्यक है संतुलित आहार का तात्पर्य है उनके आहार में प्रोटिन, वसा, कार्बोहाइड्रेड, खनिज लवण तथा विटामिन की उचित मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए।
- हरा चारा– बरसीम, हाथी घास, लोबिया, लुर्सन, काउपी।

नोटः

- दो वियान के बीच का अंतराल अगर ठीक से देखभाल किया जाये तो करीब13–15 महीना होना है।
- दूध देने की अवधि प्रति वियान औसतन 300 दिन माना गया है।
- हरे चारे की मात्रा प्रमुखता से होनी चाहिए एवं लागत कम होनी चाहिए।
- गर्मीयों में शुद्व साफ पानी की मात्रा बढानी चाहिए ।
- अधिक दुध देने वाली पशुओं में गुड़, शीरा व तेल जैसे पदार्थ आवश्यकता अनुसार मिलाना चाहिए। जिससे उनकी उर्जा की आवश्यकता पूरी हो सके।

(घ) बदलते मौसम में दुधारु पशुओं की देखभाल :

- गर्मी व सर्दी से बचाकर उनको एक उँचे आरामदायक स्थान पर रखना चाहिए। सर्दियों में विछावन गीला न होने दे और खिडकियों में बोरी आदि लगाकर ठंडी हवा से पशुओं को बचाना चाहिए। गर्मीयों में लू से बचाने हेतु 3–4 बार पानी पिलाना चाहिए और पशु के उपर पानी का छिडकाव करना चाहिए।
- आवास ऊँचें स्थान पर होना चाहिए एवं हवा रोशनी एवं धूप का भरपूर आदान प्रदान होना चाहिए, फर्श पक्का होना चाहिए एवं मल मूत्र के त्वरीत निकासी की उचीत व्यवस्था होनी चाहिए। रात्रि में प्रकाश की उचीत व्यवस्था होनी चाहिए।
- आसपास पानी का जमाव नहीं होना चाहिए।
- गोशाला के आसपास छायादार पेड़ होना चाहिए।

(ड) दुध उत्पादन पर बिमारीयों का प्रभाव :

पशुओं में अधिक दुध उत्पादन एवं अधिक कार्य क्षमता के लिए उत्तम आहार एवं विशेष प्रबंध के साथ साथ स्वास्थ पर भी ध्यान देना आवश्यक है। अच्छे संतुलित भोजन एवं अच्छे देखभाल के अभाव में पशु कई बार बीमारियों से ग्रसित हो जाते है, जिसका इनके दूध उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है।

- जीवाणु (Bacterial) जनित रोग–लगंडी बुखार, गला घोंटू, क्षय रोग, थनैला, ब्रुसेलोसिस, एक्टिनोमाइकोसिस एवं एक्टिनोवेसिलोसिस
- विषाणु (Viral) जानित रोग– चेचक, खुरहा मुँहपका रोग (F.M.D) एनीली जीभ (Blue tongue)
- प्रोटोजोआ, सर्रा, एनाप्लाजमोसिस, ववेसियोसिस एथैलेरियोसिस एवं कॉकसीडियोसिस आदि

उपचार :

Berenil- vet 7% RTV, Butalex,

बाहय परजीवी (Ectoparasite) जनित रोग– चमोकन, flea, lice- जिसे हाथ से चुनकर जला देना चाहिए एवं Butox vet 1ml/lit, Pectocide, Taktic आदि दवाओं का उपयोग लाभप्रद है।

- अन्तः परजीवी (Endo Parsite) जानित रोग–पत्ती कृमिए गोल कृमि, फिता कृमि। इसमें पानाक्योर, नीलवर्म एवं बेनमीन्थ दवाओ का उपयोग किया जाता है।

उपचार :

- Dewoming- Fendikind plus Bolus एक बोलस सुबह खाली पेट या
- Panacur- 150 mg tablet/30 kg bwt.

संतुलित पशु आहारः अनुपातिक मिश्रण

क्रम	मुख्य अवयव / घटक	मात्रा (प्रतिशत में)
1	खल्लियां मूगफली, सरसों, तिल, बनौला, अलसी आदि की खल्ली	25–30
2	मोटे अनाज, गेहुँ, जौ, मक्का जवार	25–30
3	अनाज के बाई प्रोडक्ट चोकर, चुन्नी, चावल आदि	10–30
4	खनिज मिश्रण	1
5	आयोडिनयुक्त नमक	2
6	विटामिन ए, डी–3 का मिश्रण	20–30 या प्रति 100 किलो

संतुलित पशु आहार के मुख्य अवयव / घटक

संतुलित आहार में हरे चारे एवं खल्ली/दाने के मिश्रण का महत्व

- Pana cur- vet powder
- Tolzan Pluse-L
- Tolzan F vet
- Trumectin- Ecto/Endo 1ml/4 kg Bwt
- आहार जनित रोग– दुग्ध बुखार (Milk fever), Ketosis, घेघा रोग (Goitre), बाल का झडना (Alopecia), Pica

(च) टीका करण (Vaccination)

- गलाघोटू (मांस में)– वर्षा प्रारंभ होने के पूर्व टीकाकरण करना चाहिए। मई माह में प्रथम टीका छः माह की आयु तक एवं पूर्ण टीका प्रति वर्ष।
- खुरहा मुँहपका रोग (चमड़े में)– प्रथम टीका छः माह की आयु तक, प्रथम टीके के चार माह के आयु के बाद बुस्टर टीका वर्ष में दो बार फरवरी और सितम्बर महीने में देना चाहिए।
- लंगडा बुखार (चमडें के बीच)– वर्षा प्रारंभ होने के पूर्व मार्च–अप्रैल माह में प्रथम टीका छः माह की आयु में, पुर्ण टीका इसके बाद प्रतिवर्ष ।
- ब्रुसेलोसिस (चमडें में) – आठ महीने के उपर के उम्र में। गर्भवती मादा में नहीं देना चाहिए।

टीकाकरण सारणी

क्रम	रोगों के नाम	प्रथम खुराक के समय आयु	बुस्टर खुराके	अगामी खुराक
1	खुरहा मुँहपका रोग (FMD)	चार माह एवं उपर	प्रथम खुराक के एक महीना बाद	छः माह पर
2	गला घोटूँ (HS)	छः माह एवं उपर	-	संकमित क्षेत्र में वार्षिक
3	लंगडी बुखार (BQ)	छः माह एवं उपर	-	संकमित क्षेत्र में वार्षिक
4	ब्रुसोलोसिस	छः से आठ माह की आयु तक (सिर्फ मादा बाछियों)	-	पुरी आयु में एक बार
5	थेलेरियोसिस	तीन माह या उपर	-	पुरी आयु में एक बार
6	गिलटी रोग (एनथरेक्स)	चार माह एवं उपर	-	संकमित क्षेत्र में वार्षिक
7	आई बी आर (IBR)	तीन माह या उपर	प्रथम खुराक के एक महीना बाद	छः माह पर
8	रेबीज	रोग की पहचान के तुरंत बाद	चौथा दिन	प्रथम खुराक के बाद 7,14,28 एवं 90दिनों पर

(छ) अधिक दुध उत्पादन के लिए विटामीन सप्लीमेंट

- Mifex oral 100 मिली लिटर प्रतिदिन दस दिनो तक।
- Pecutrin- (900 ग्रम का पैक) 30 ग्रम प्रतिदिन।
- Milk dhara- 100 ग्रम प्रतिदिन खाने के साथ।
- Cadisol DC- 50 मिली लिटर दिन में दो बार।
- Gomin- 25 ग्रम प्रतिदिन।
- Vetkal B 12. 50मिली लिटर खाने के साथ।
- Milkmin- 28 ग्रम प्रतिदिन खाने के साथ।
- Supplivite- M- 30 ग्रम प्रतिदिन।
- कभी कभी गाय दुध चुरा लेती है। तो Leptadin Forte (100 कैपसुलपैक) 10 दूध दुहने से 1/2 घंटा पहले एक महीना या 15 दिन तक।

निष्कर्ष :

भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वरा विगत कुछ वर्षों से प्रगतिशील किसानों की आय दुगुनी करने की दिशा में कई स्तर पर यथा पशुपालकों का उच्च प्रशिक्षण, पशुधन रोजगारोन्मुखी शोध एवं सेमिनार इत्यादि कार्य किए जा रहे हैं। आज के शिक्षित युवा नवीन आधुनिक एवं वैज्ञानिक विधि अपनाते हुए पशुधन की उत्पादन क्षमता बढ़ा कर एक संतुलित एवं आधुनिक जीवन शैली को आकार दे सकते हैं एवं सरकारी सेवाओं पर बेवजह अपनी निर्भरता से बच सकते हैं।